नाना नानी

गोंडी

घनश्याम तिवारी

चित्रांकन: धनंजय

एकलव्य

नाना नानी

एक लम्बी कविता

घनश्याम तिवारी

चित्रांकन: धनंजय

एकलव्य

नाना नानी

एक लम्बी कविता

नाना-नानी (गोंडी)

Nana-Nani (Gondi)

घनश्याम तिवारी

चित्रांकन: धनंजय

हिन्दी से गोंडी अनुवाद: उर्मिला तेकाम, दुर्गा धुर्वे (शाहपुर)

संयोजन: खेमप्रकाश यादव, आकाश मालवीय, हेमराज मालवीय, निदेश सोनी, अशोक हनोते, सुनील हनोते, राजेन्द्र देशमुख ।

सम्पादकीय व उत्पादन सहयोग: इन्दु श्रीकुमार व कमलेश यादव

दूरबीन एचटी पारेख फाउंडेशन के वित्तीय सहयोग से विकसित

यह किताब हिन्दी व कोरकू भाषा में भी उपलब्ध है

संस्करण: मार्च 2024 (2000 प्रतियाँ)

कागज़: 100 gsm मैपलिथो व 220 gsm एफबीबी (कवर)

ISBN: 978-81-19771-31-8

मूल्य: ₹ 20.00

प्रकाशक: **एकलव्य फाउंडेशन**

जमनालाल बजाज परिसर

जाटखेड़ी, भोपाल - 462 026 (मप्र)

फोन: +91 755 297 7770-71-72-73

वेबसाइट: www.eklavya.in; ईमेल: books@eklavya.in

मुद्रक: आर के सिक्युप्रिंट प्रा लि, भोपाल; फोन: +91 755 268 7589

नानाल नानीन से वनक्तुल,
अगर बैगई पुटल कोडा,
नी से आसिदाका अना ऊँचो थोड़ो ।

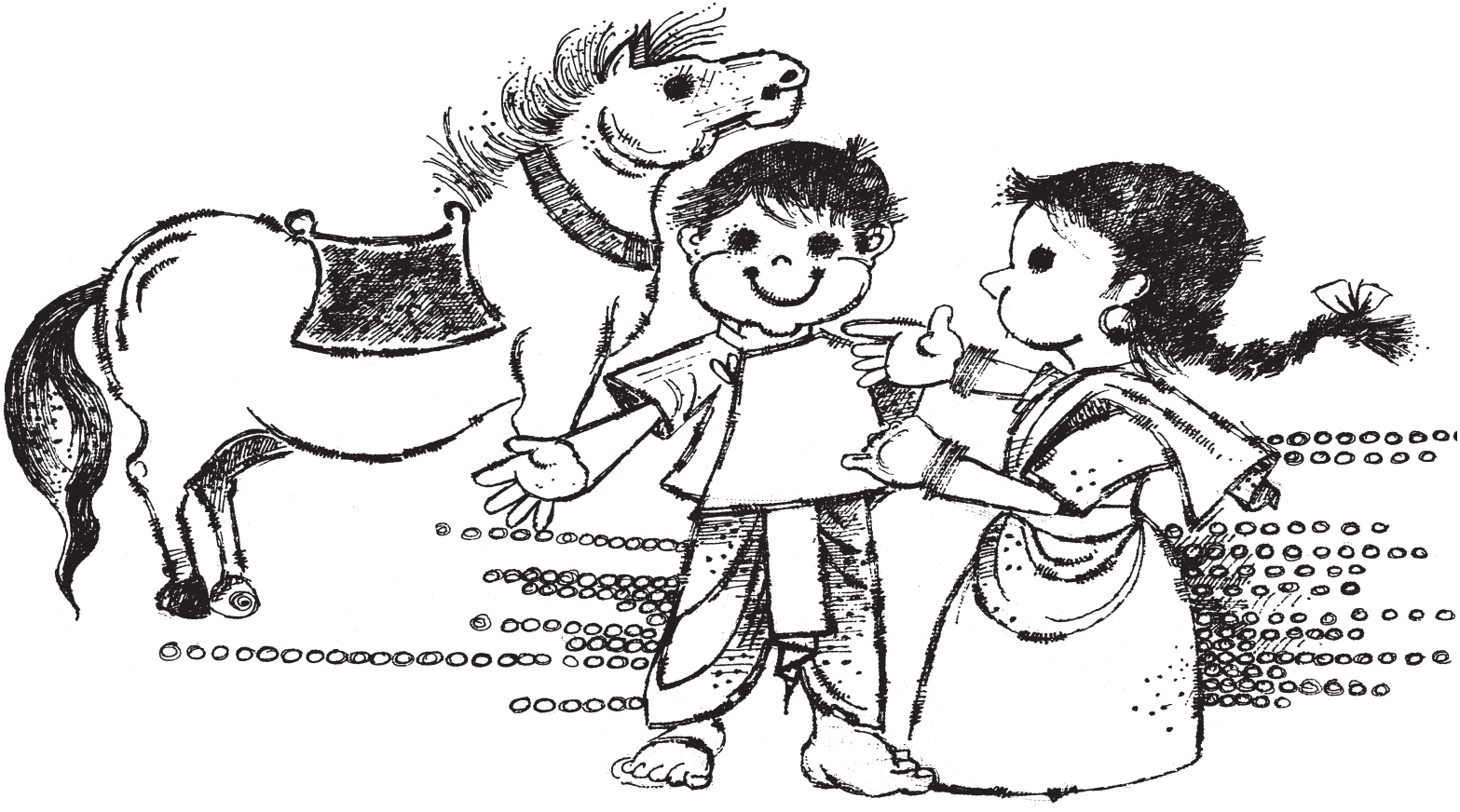

नानी वनक्तु
अगर बैगई हाथी पुटल,
नी से ऊँचो अना आसिदाका ।

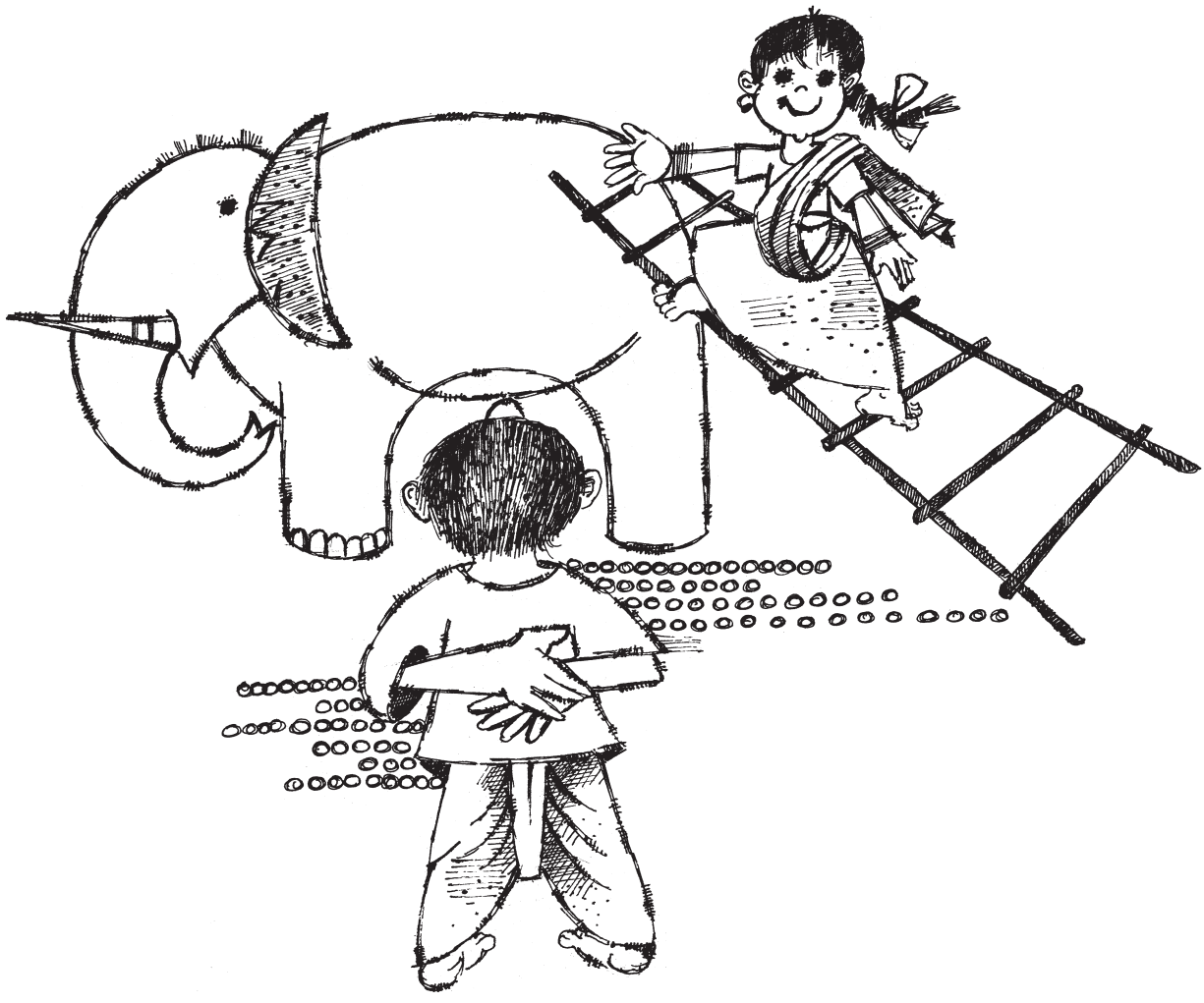

नानाजिन गुस्सा वातु,
तल्ला ओना थोड़ो गरम आतु,
यदि ऊँट ते तरीका अना,
सबसे ऊँचो आसिदाका अना ।

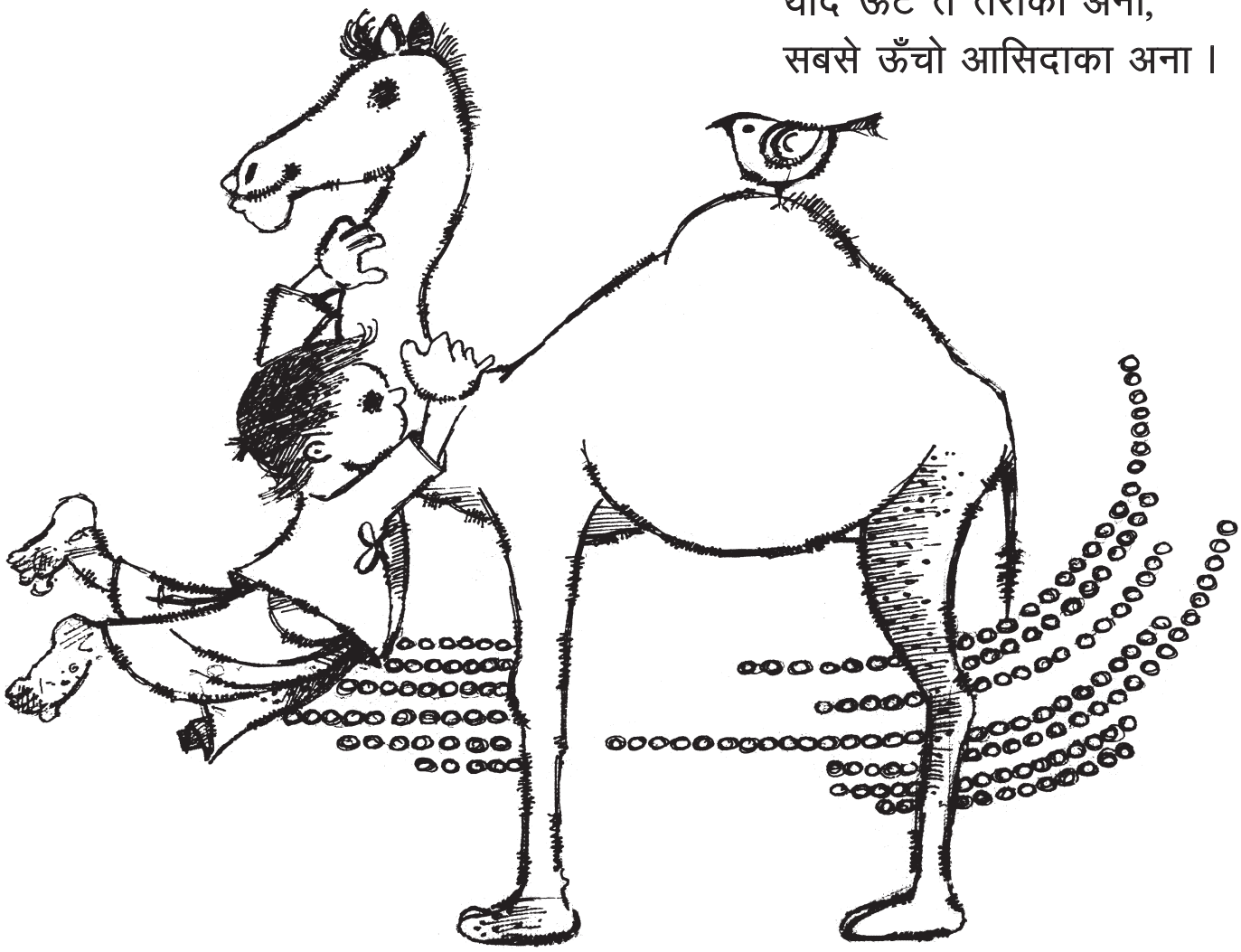

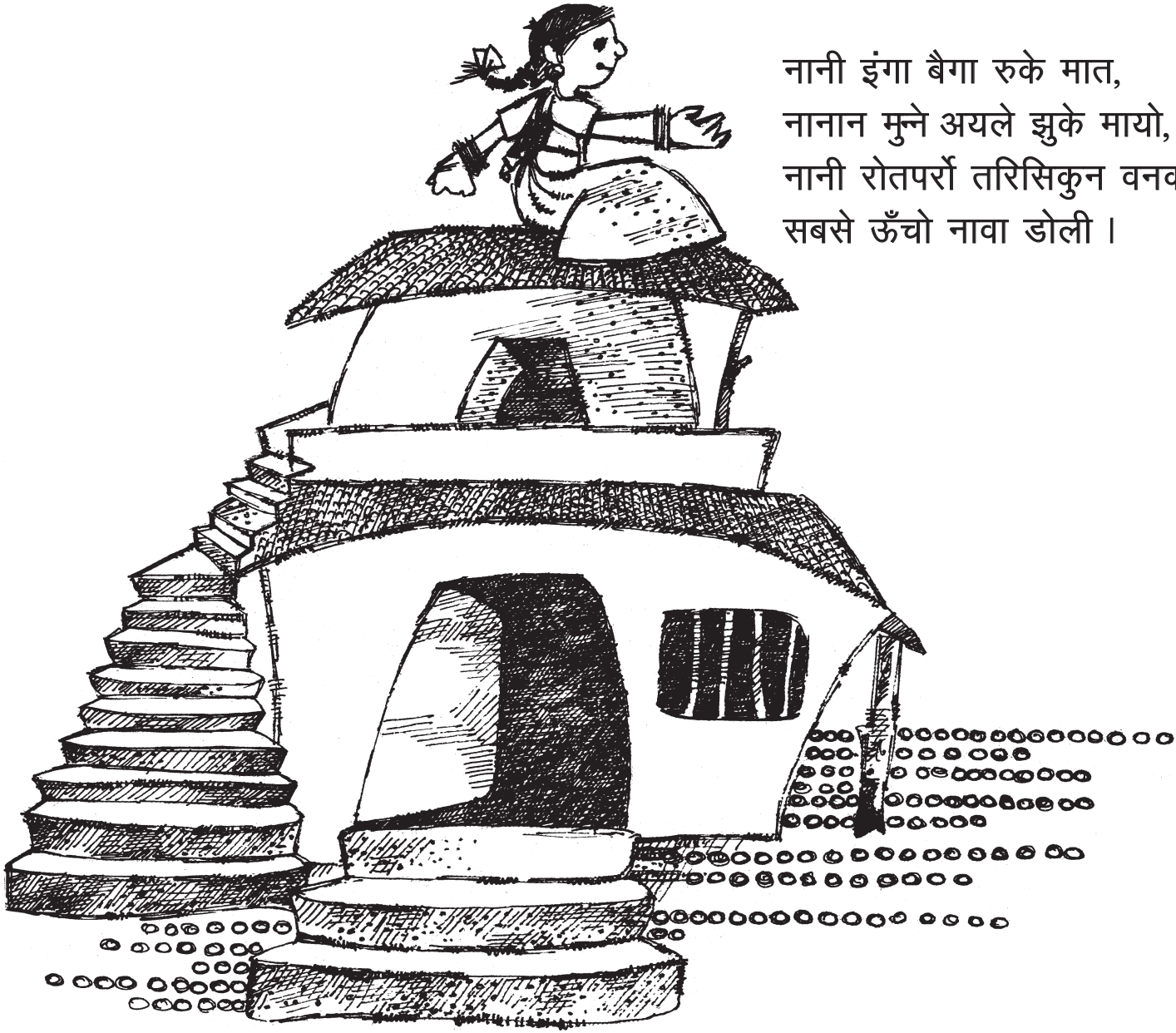

नानी इंगा बैगा रुके मात,
नानान मुन्ने अयले झुके मायो,
नानी रोतपर्रो तरिसिकुन वनक्तु,
सबसे ऊँचो नावा डोली ।

नाना जी इंगा वित्ति लातुल,
वित्तुल वित्तुल जोर तल वित्तुल,
जोर तल वित्तुल जोर तल वित्तुल ।

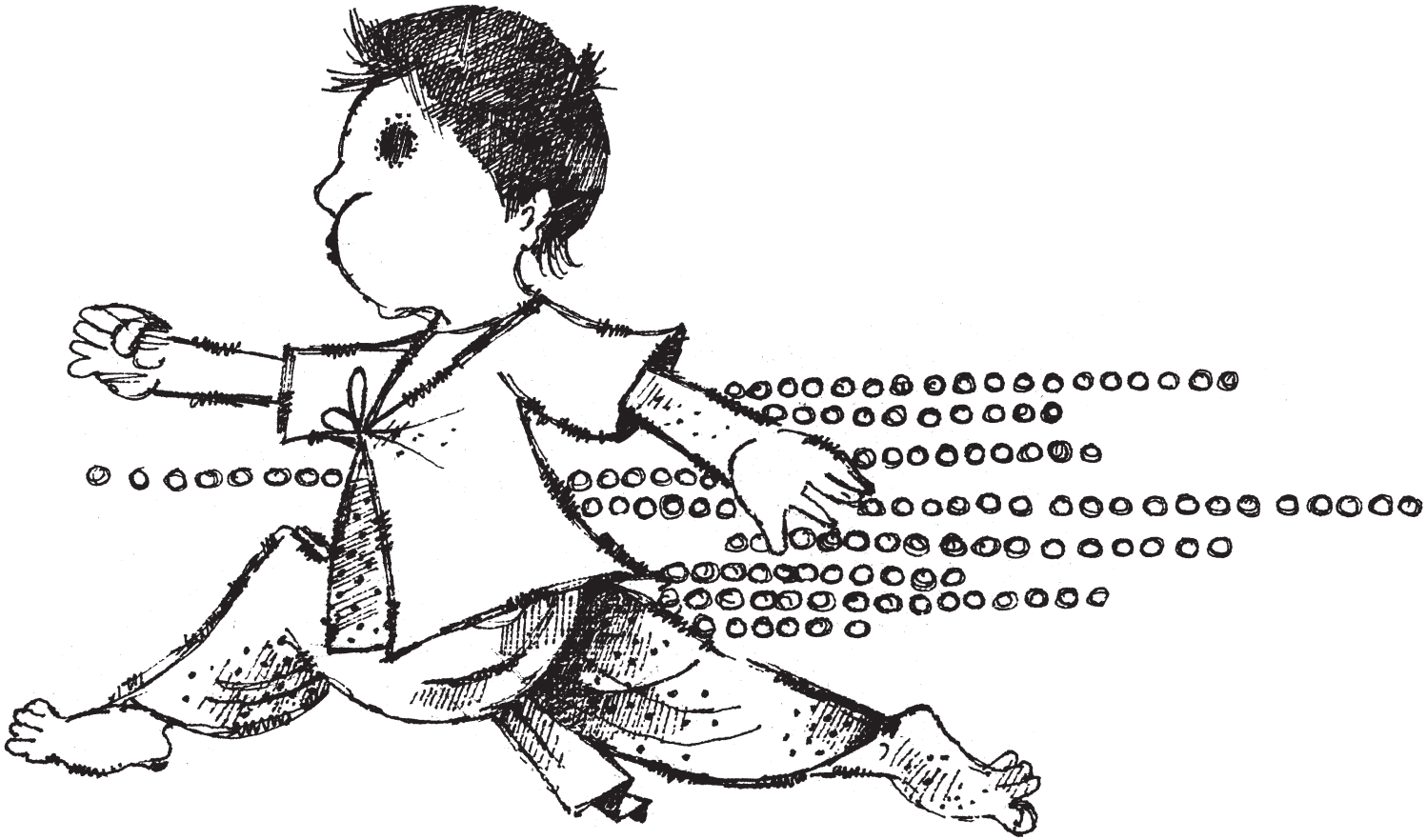

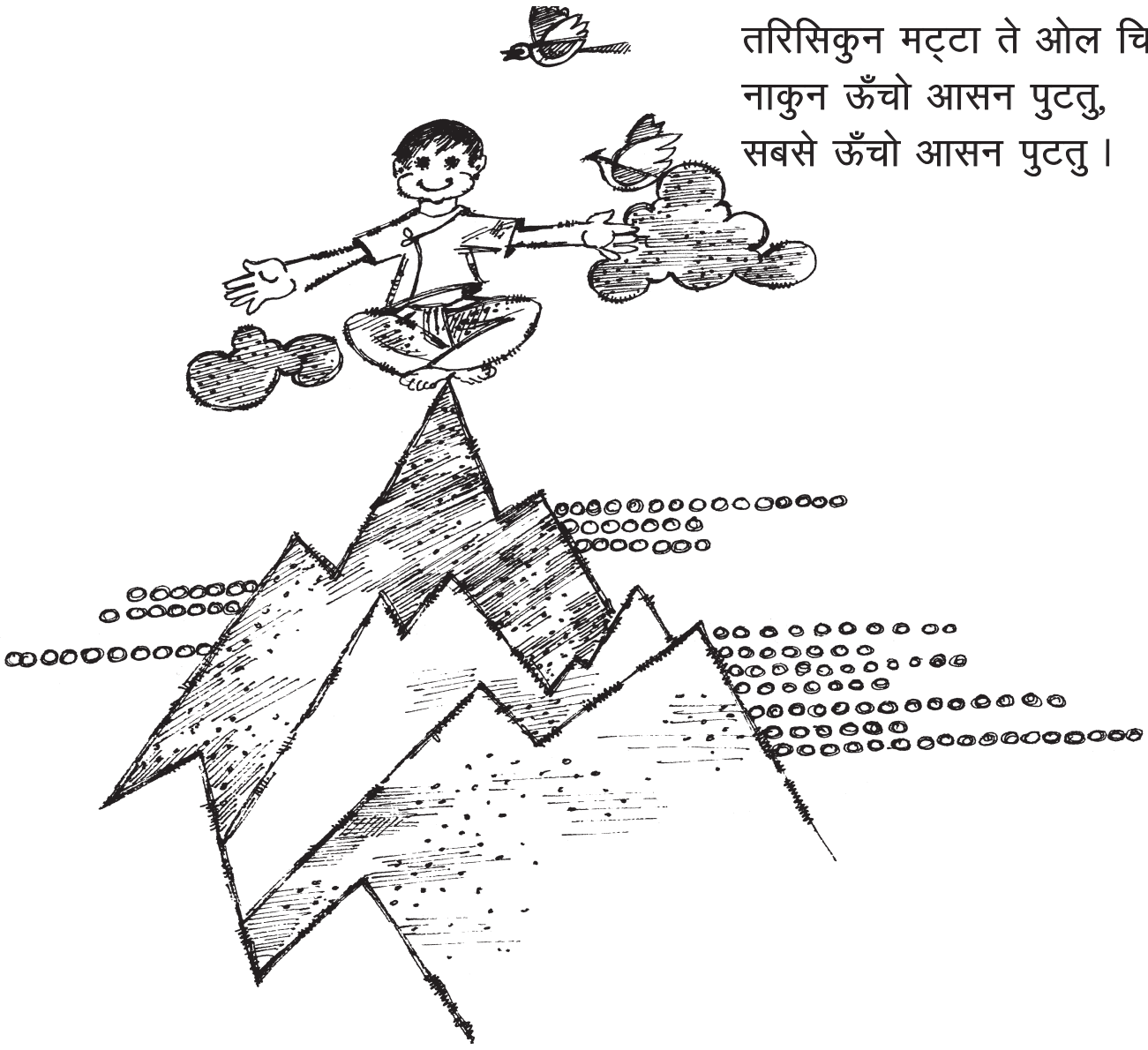

तरिसिकुन मट्टा ते ओल चिल्ले मातुल,
नाकुन ऊँचो आसन पुटतु,
सबसे ऊँचो आसन पुटतु ।

नानी चंदा ते तरिसिकुन वनक्तु,
सबसे ऊँचो नावा डोली,
बादल ता लेका नावा डोली ।

नानाल मन ही मन वनक्तुल,
इदेंन से ऊँचो मंदाल बांग?

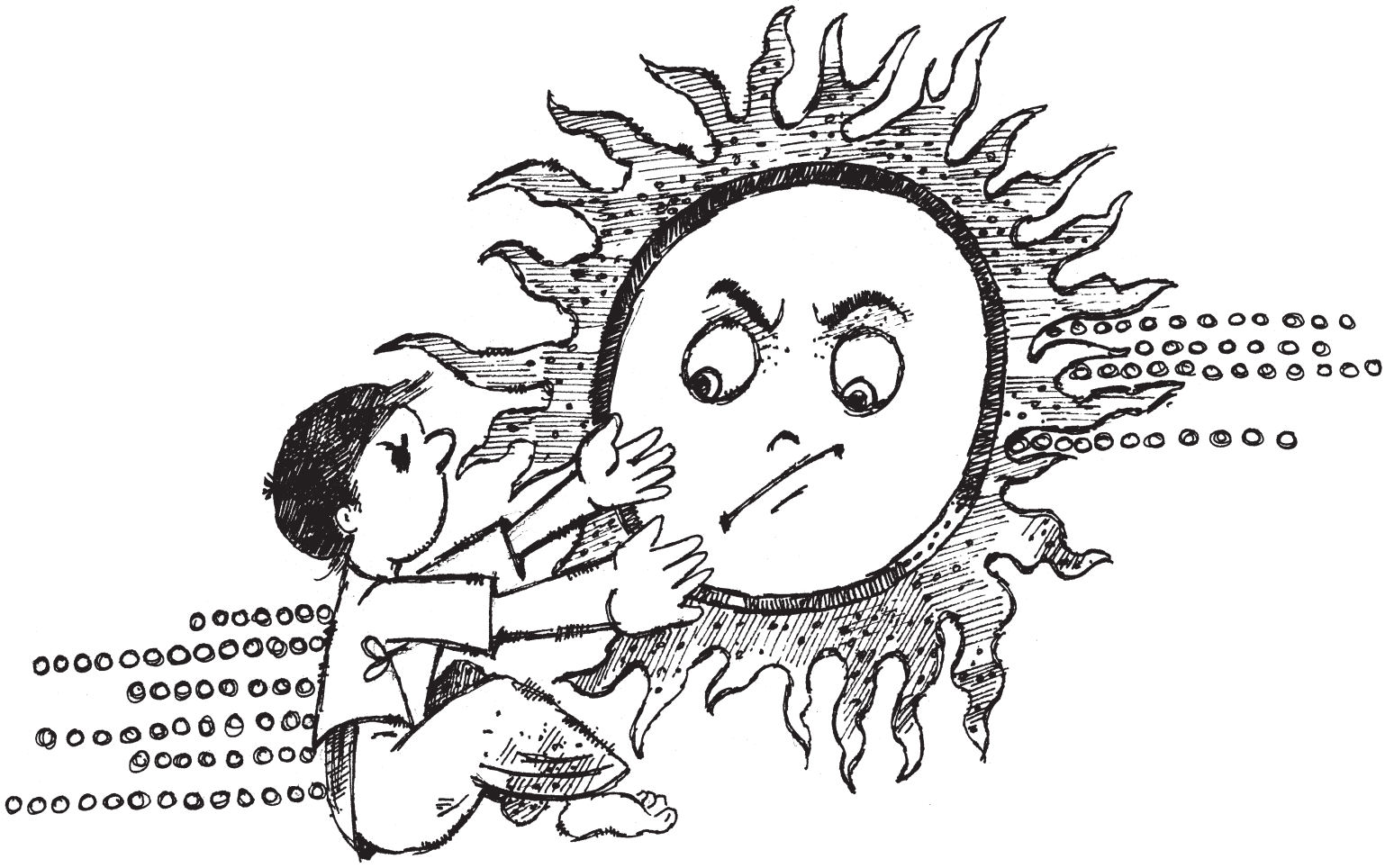

नानाल सूरज तक वित्तुल,
गरम लागतु चिल्लेमासिकुन वनक्तुल,
करुसेतन ..... आ! आ!

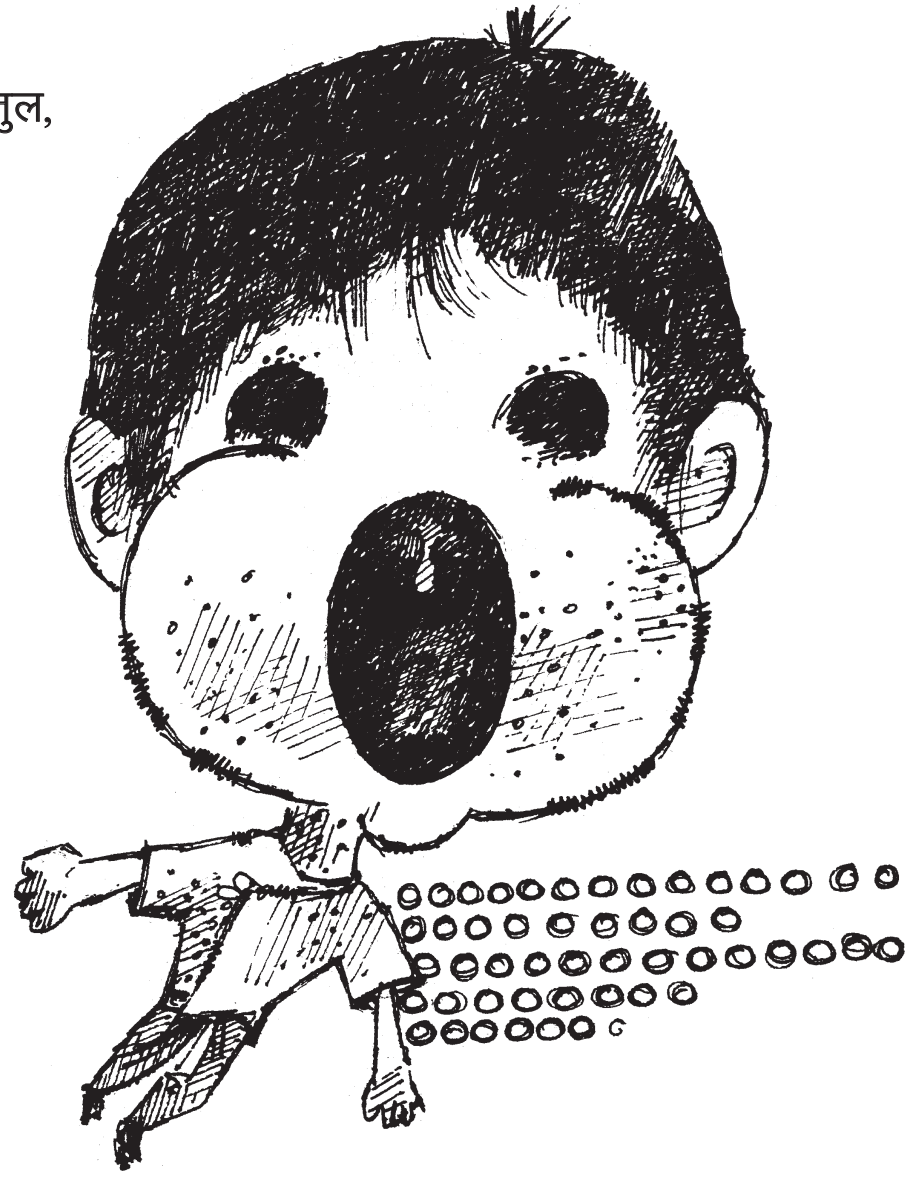

अल बनेमायोंन हई नी से ऊँचो,
नानी इंगा इम्मा नीचो वासेन,
नानी इंगा इम्मा नीचो वासेन।

नाना-नानी बोल हई?

नाना-नानी दरअसल मिवाइलेकई ही रंड छव्वांग हई-उन्दी टूड़ल उंडे उन्दी टूड़ी | मध्यप्रदेश ते, एकलव्य संस्था काम क्याता हई, कुछ एरिया ने गुजराती उंडे मालवी भाषा ता प्रभाव हई | इव भाषा ने "नाना-नानी" ना मतलब हई | छोटा-छोटी | अक्सर छुडोक छव्वानुंग नाना-नानी इंजीकुन केयन्दुर हई | गुजराती ते अगर इन्दाना की "छुडोल छव्वा हई" ते इंदकाट "नानी छोकरी छे" |

जब इद कविता लिखे मासीता, तब हमाट मध्यप्रदेश ता उन्दी हिस्सा ते छव्वानुंग पढ़ेमायालक भाषा ता उन्दी किताब तैयार किन्दाम- नाम मत्ता ख़ुशी-ख़ुशी | धीरो-धीरो इद किताब उन्दी ज्यादा फड़ा एरिया ते फैलेमातु | तब हमाट उड़ताम की लयसुंग इंसान इद कविता ते "नाना-नानी" न हिंदी त प्रचलित अर्थ (दायाड़ी ना दायाड़-दाउड़ल) न रूप ते समझे मायतोड़ हई | मजेदार मांदी इद हई की इद नयो अर्थ दे भी, छव्वांग उंडे फड़ोक रंटे ही मजा एतदुर |

इद कविता न सरल शब्द, भाषान संग चुहलबाजी उंडे रूठेमायाना-मनेकाना सरल भावो ते मिकुन मजा वायल, इद सोचेमासिकुन इंगा हमाट इद कविता तुन उन्दी चित्रकथा ता रूप सितोराम हई | उम्मीद हई कि मिवा जैसो पढ़ाकुओ ता पास ते इद उंडे-उंडे मुन्ने तक अवल |

जब इद कविता ता जन्म उंडे बाद ते बदलाव त किस्सा हमाट अपनों चित्रकार साथी धनंजयन बतीकिताम ते ओल इस किस्सा तुन पिरोयो किसीकुन इदेना चित्र बनीकितुल | उंडे कविता तोल लेखक घनश्याम तिवारीन इद नयो प्रयोग तिनाल हमाट ख़ुशी-ख़ुशी इजाजत सिसीताम |

पढ़ेमायाना सीखेमायतोर छाव्वानुंग किस्सा ना फड़ा तलास मंता हई | अपनता इद नयो सीखेमायना हुनर तुन मिरक्यालय | बांगे गिनो चुनो पात्र, तुन थोड़ो सो शब्द, बारीकीतल खूब सारो चितुर जो की नजर उंडे मन तल रुकेमायान लय ठौर बनेमासिदाल... चित्रकथा इद जरुरत तुन पुरो क्यालय उन्दीदम खड़ो रयतु हई | तानसई तो चित्रकथा अक्सर छाव्वानांग जीवन भर ता साथी बने मासेनता हई |

दूरbeen
Read · Imagine · Explore
AN INITIATIVE OF H T PAREKH FOUNDATION

एकलव्य

मूल्य: ₹ 20.00

9 788119 771318

मध्य प्रदेश में बैतूल क्षेत्र में बोली जाने वाली गोंडी भाषा पर आधारित